## (एपिसोड - 17)

## "वनस्पति और जीव-जन्तु प्रजातियों का विस्थापन"

**मुख्य शोध एवं आलेख - डॉ० आर.एस. यादव**
**हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव**

***कलाकार***:--

**(1) रामू (12 वर्ष) - जमूरा**
**(2) महेश (35 वर्ष) - जादूगर / मदारी**
**(3) नरेश (23 वर्ष) - शोधार्थी छात्र**
**(4) डॉ० कृष्णा (55 वर्ष) - पर्यावरण विज्ञान का प्रोफेसर**
**(5) नेहा (27 वर्ष) - सहायक प्रोफ़ेसर एवं स्कूलर**

### ## प्रारम्भिक संगीत ##

ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण पर आधारित विज्ञान धारावाहिक की इस कड़ी में आज सुनेंगे कि किस प्रकार ग्लोबर वार्मिंग से पेड़-पौधे, वनस्पतियाँ और जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ प्रभावित हो रही हैं ? धीमी गति से हो रहा यह परिवर्तन, अभी हम महसूस नहीं कर पा रहे हैं, परन्तु आने वाले समय में इसके प्रभाव स्पष्ट दिखने लगेंगे |

***दृश्य 1*** : शहर की सड़कें / बस, कार और गाड़ियों के आने-जाने का शोर और हॉर्न / एक जादूगर...सड़क के किनारे, अपने खेल की तैयारी में / डमरू / ढ़ोलक की ध्वनि

**महेश** : मेहरबान ....कदरदान...सुनो...सुनो...

**रामू** : उस्ताद ! आज तुम्हारे मन में क्या चल रहा है ? तुम्हारी आवाज बता रही है, कुछ नया होने जा रहा है |

**महेश** : जमूरे ! एक सच्चाई एक रहस्य..जिसे बताना कष्टदायक है |

**रामू** : रहस्य...क्या है - वो रहस्य ? पहली बार सुन रहा हूँ, तुम्हारेमन में भी, कोई रहस्य छुपा हुआ है | तुम्हारे मन में तो कोई बात, छुपी रह ही नहीं सकती है | तुम्हारा मन तो किताब के खुले पन्नों जैसा है |

**महेश** : जमूरे ! आयु से कुछ ज्यादा ही बड़े लगते हो ? बहुत चतुराई भरा सवाल |

**रामू** : (हँसते हुए) उस्ताद ऐसा नहीं है | मैंने, सब कुछ तुम्हारे से ही सीखा है | यह मेरा नहीं, तुम्हारा मस्तिष्क काम कर रहा है |

**महेश** : मेहरबान...कदरदान | सुनो...सुनो...क्या कह रहा है | जमूरा, अपनी उम्र से कहीं अधिक समझदार लगता है | अभी तो इसके, दूध के दांत भी नहीं टूटे हैं | परन्तु अपने दादा की तरह बात कर रहा है |

**रामू** : (हँसते हुए) उस्ताद तारीफ़ के लिए धन्यवाद |
परन्तु, आज तुम्हारे जादू के पिटारे में क्या कुछ है ? क्या कोई बड़ा रहस्य लाये हो ?

**महेश** : जमूरे, थोड़ा इन्तजार करो ? थोड़ी देर में, सब कुछ तुम्हारे सामने होगा | मैं, अपने रहस्य को ज्यादा देर तक पिटारे में नहीं रख सकता / थोड़ी देर में सब कुछ सामने होगा |

**रामू** : मेरे हुजूर ! मेरे मन में भी एक रहस्य है....जादू का पिटारा..

**महेश** : (हँसते हुए) ट्रिक.....यानी जादू....वो भी तुम....बहुत अच्छा |
सभी दर्शक तुम्हारे जादू को देखना चाहेंगे / अच्छा पहले कौन... तुम या मैं....

**रामू** : बॉस, इसका निर्णय हम नहीं कर सकते | ये निर्णय हम दर्शकों पर छोड़ते हैं | उस भद्र पुरुष को देखो / पढ़ा-लिखा है, और लगता है कहीं पढ़ाते होंगे | आपकी तरह...(हँसते हुए)

**## भीड़ का सामूहिक स्वर....पहले जमूरा ##**

**महेश** : बहुत अच्छा | जनता- जनार्द्धन सबसे ऊपर...ये ठीक है |
मेरे उस्ताद, तुम्हारा स्वागत है | इस स्थान पर आ जाओ | तुम, बहुत पहले से इस सीट की प्रतीक्षा में थे |

**## ध्वनि प्रभाव - डमरू ##**

**रामू** : (हँसते हुए) अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे / समझे, - क्या कह रहा हूँ | आज तुम्हें जमूरे का आदेश मानना है | सारे बदले लूँगा .....(हँसते हुए)

**महेश** : ओ.के. मेरे मालिक ! जमूरा हाज़िर है | मेरे लिए क्या आदेश है ?

**## ध्वनि प्रभाव - ढ़ोल / डमरू ##**

**रामू** : मेहरबान और कदरदान | जल्दी ही, आपके सामने एक अद्‌भुत जादू होगा | दिल थाम कर बैठना |

**महेश** : स्वामी...हमारे ये सभी भाई, मन और वचन से सच्चे हैं | वो आपके जादू की प्रतीक्षा कर रहे हैं | आपके मन में और आपके पिटारे में क्या है ? जल्दी करो |

**रामू** : इन्तजार....थोड़ा इन्तजार करो | सब्र का फल मीठा होता है|

**महेश** : मेरे मालिक, समझा | मैं तो इन्तजार कर सकता हूँ | परन्तु इन लोगों का ` क्या होगा |

**रामू** : (हँसता है) अच्छा ! अच्छा ! अब और प्रतीक्षा नहीं | (ढ़ोल/ डमरू की ताल) अपना ध्यान, इधर कीजिये | ये झोला खाली है...देखिये....देखिये....अच्छी तरह से देखिये / कोई आप में से देखना चाहेगा | आप....आप....आगे आयें |

**महेश** : मुझे शक है...मी लॉर्ड | इसके अन्दर कुछ है | देखो भरा हुआ लगता है | जनता जनार्द्‌धन सब देख रही है |

**(एक स्वर में) हाँ इसके अन्दर कुछ रखा हुआ है |**

**रामू** : (हँसता है) ये तो सब मेरे जादू का कमाल है | मेरे पास शुरू में खाली थैला था और देखो...देखो...ये तो फूलों की पंखुड़ियों से भरा है | मैंने स्वर्ग से ये सब पंखुड़िया मंगवाई हैं | मन ही मन मैंने मन्त्र पढ़ा...और लो, स्वर्ग की परियाँ मेरे बैग को फूलों से भर गई | जरा सूँघो ! क्या खुशबू आ रही है | आइये...आइये ! स्वर्ग से आई इस महक का आनन्द लीजिये | इस प्रकार के मौके जीवन में कभी-कभार आते हैं |

**# ध्वनि प्रभाव....चरों तरफ चक्कर लगाते हुए ढ़ोल पीटना #**

**महेश** : हुज़ूर ! पब्लिक सब जानती है | 21वीं सदी में जी रहे हैं | सब पढ़े-लिखे हैं | इन्हें मूर्ख नहीं बनाया जा सकता है | वो यहाँ हमारे कारनामे और कला को देखने के लिए आये हैं | परन्तु जो आप कह रहे हैं, वह भी सही है |

**रामू** : (हँसते हुए) सच्चाई छुप नहीं सकती, बनावट के वसूलों से और ख़ुशबू आ नहीं सकती कागज़ के फूलों से....

**## ढ़ोल / डमरू / नगाड़े का प्रभाव ##**

बॉस, ये एक सच्चाई है | मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब आप मुझको जादू की इस कला में पारंगत कर दोगे|

**महेश** : तुमने कहा था - सहज पके सो मीठा होय | जरा धैर्य रखो | वह दिन भी आएगा, जब तुम इस कला में सिद्धहस्त हो जाओगे, परन्तु आज तुमने एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है | स्वर्ग की खुशबू....तुम्हें पता होगा, हमारी इस धरती माता ने हमें सब कुछ दिया |

**रामू** : स्वर्ग और वो भी इस धरती पर / क्या कह रहे हो....मुझे तो कहीं दिखाई नहीं देता है |

**## ध्वनि प्रभाव ##**

**महेश** : हाँ जो मैं कह रहा हूँ, वह एक सच्चाई है | देखो...देखो...कितना सुन्दर आसमान, ठण्डी हवा, हरे-भरे वृक्ष, हवा में उड़ते पक्षी और सबसे बड़ी सुन्दरता....भांत -भांत के लोग | ये क्यों है, किसके लिए और किसने बनाए हैं | कभी कल्पना की है |

**नरेश** : (दर्शकों की भीड़ से) बहुत सुन्दर कहा ! सुन्दर आसमान - दिन में सूर्य और रात में चमचमाते सितारे / पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं का सुन्दर संसार और कल-कल बहता पानी / ये सब इस सुन्दर संसार को परिभाषित करने के लिए पर्याप्त हैं |....परन्तु.....

**महेश** : इस नौजावान के लिए तालियाँ .....

**## ध्वनि प्रभाव ##**

**महेश** : आपका क्या नाम है ?

**रामू** : बॉस...ये पढ़े-लिखे होशियार युवा हैं | काश मैं सब ये पढ़ पाता !

**महेश** : जमूरे ! निराश मत हो | एक दिन तुम बहुत बड़े कलाकार बनोगे |

**नरेश** : हाँ रामू ! तुम्हारा बॉस सही कह रहा है | शिक्षा का दायरा बहुत बड़ा है | समाज में सही सन्देश देकर, तुम बहुत बड़ा काम कर सकते हो |

**महेश** : हाँ बाबू ! हमारे जादू के खेल में भी कुछ भाग, इस प्रकार के संदेशों पर केन्द्रित होते हैं | हम इस कोशिश में हैं कि समाज में सही सन्देश जाये |

**रामू** : माई लॉर्ड क्या हो रहा है ? हाथ कंगन को आरसी क्या ?
(हंसता है)

**नरेश** : आपका ये छोटा कलाकार बहुत होशियार है | एक दिन यह बहुत बड़ा जादूगर बनेगा |

**महेश** : (ध्वनि प्रभाव).....मेहरबान....कदरदान ! रामू तो स्वर्ग से खुशबू ले आया (हँसता है) आगे क्या देखना चाहोगे.....स्वर्ग के पक्षी .....या जानवर....या....या....फिर एलियन.....

**## ध्वनि प्रभाव ##**
**.....एक स्वर में एलियन.....**

**रामू** : नहीं मालिक...एलियन नहीं....मुझे डर लगता है | कुछ उलटा-पुल्टा ना हो जाये|

**महेश** : जमूरे डरो मत ! ये सारे तुम्हारी रक्षा करने के लिए तैयार हैं | ये एलियन किसी दूसरी दुनिया से नहीं आये हैं | ये वो अद्भुत जीव हैं, जो हमारी इस पृथ्वी पर ही पाये जाते हैं |

**## ध्वनि प्रभाव ##**

**महेश** : आबरा...का डाबरा....छूमन्तर....सिम...सिम...आजा....मेरे मालिक एक पल के लिए अपनी आँखें बंद करेंगे | देखो....देखो....कितना सुन्दर....और अद्भुत जीव....नई दुनिया का नया जीव..... ये एलियन दक्षिण धुर्वीय प्रदेशों से चलकर आया है | क्या आपने पहले कभी इतना सुन्दर...रंगबिरंगा कछुआ देखा है | कभी नहीं....क्या कारण रहे, जिसके कारण इसे अपना घर छोड़ना पड़ा ? कल्पना कर सकते हो |

**रामू** : हुज़ूर...मैंने तो कभी पहले ऐसा जीव नहीं देखा | अवश्य रास्ता भटक गया होगा | बेचारा....अपने परिवार से बिछड़ गया |

**महेश** : हाँ जमूरे ! घर-घर ही होता है | इसके दूसरे दोस्त भी इसके साथ हैं |

**रामू** : हुज़ूर....मुझे तो कुछ नहीं दिखाई दे रहा है |

**महेश** : इंतज़ार....जमूरे....इंतज़ार

**## ध्वनि प्रभाव - ढ़ोल / डमरू / नगाड़े ##**
**आबरा का डाबरा...छूमन्तर... आबरा का डाबरा...निकल बाहर**
**## चिड़िया / पक्षियों के उड़ने और चहचाहट ##**

**(एक स्वर में):** हे भगवान्....ये क्या ? हमने तो पहले, कभी ये पक्षी नहीं देखे.....

**नरेश** : ये जीव-जंतु और पक्षी गर्म प्रदेशों में नहीं पाए जाते हैं | परन्तु ग्लोबल वार्मिंग और मौसम में बदलाव के कारण, ये जीव अपने घरों को छोड़ने पर मजबूर हैं | जो पक्षी यहाँ देख रहे हो...ये पहले प्रशांत महासागर के कुछ द्वीपों पर ही पाए जाते थे | परन्तु बदलते मौसम और भोजन की कमी से इन्हें अपने क्षेत्रों को छोड़ना पड़ा है |

**रामू** : बहुत अच्छी जानकारी...लगता है, सर्वज्ञानी है (हँसता है)

**महेश** : हाँ जमूरे ! मैं तो कल्पना ही कर सकता हूँ, परन्तु ये तो सब जानता है | लगता है कोइ वैज्ञानिक है | मैंने ठीक कहा है ना बाबू !

**नरेश** : हाँ महेश, तुमने ठीक कहा है | मैं एक शोधार्थी हूँ, यहाँ के एक कॉलेज में |

**(जनसमूह से .....शोध.....)**

**महेश** : मेहरबान और कदरदान....मैं आपको नहीं बता सकता, आखिर इन जीवों को क्यों अपना घर छोड़ना पड़ा | तीस साल पहले ये जीव यहाँ पर नहीं पाये जाते थे | परन्तु अब ये आपको यहाँ-वहाँ दिख जायेंगे |

**नरेश** :महेश कारण जरुरी नहीं है | आवश्यकता है आखिर ये क्यों हो रहा है | आपने ध्यान दिया होगा कि कुछ पेड़-पौधे और जीव-जन्तु जो पहले हमारे क्षेत्रों में बहुतायत में पाये जाते थे - आज वो नदारद होते जा रहे हैं |

**रामू** :(दुखी स्वर में) गायब हो रहे हैं ...वो कहाँ चले गए....उनके यहाँ से जाने के क्या कारण हैं ?

**महेश** : जमूरे ! हमारी जादू की घड़ी की भांति - इसका कारण वैज्ञानिक बाबू ही जानते हैं |

**नरेश** : महेश....अब ये रहस्य नहीं रहा है | वैज्ञानिकों ने इसका कारण जान लिया है |

**रामू** : बाबू....हमें खुशी होगी....यदि तुम बता सके तो |

**महेश** : हाँ वैज्ञानिक बाबू | हम सब जानना चाहेंगे |

**नरेश** : दोस्तो ! ये एक गंभीर विषय है | आपको जानकार खुशी होगी कि हमारे महाविद्यालय में इस विषय पर एक खुली चर्चा का आयोजन किया जा रहा है |

**रामू** : क्या हम वहाँ आ सकते हैं ?

**नरेश** : इसमें सभी आमन्त्रित हैं | चर्चा में भाग ले सकते हैं, अपने अनुभव से विचार साँझा कर सकते हैं | इन परिवर्तनों को जानने और समझने के लिए - यह कारगर सिद्ध होगी |

एक स्वर में :हम भी इसमें भाग लेंगे....वाऊ...!

***दृश्य 2*** : सुबह का समय | छात्रों का कालेज के कारीडोर में आना-जाना | नेहा और नरेश प्रयोगशाला में काम करते हुए.....

**प्रो॰ कृष्णा** : (अन्दर आते हुए) सुप्रभात....नमस्कार ! शोध कार्य की क्या प्रगति है ? पिछले माह डिज़ाइन प्रयोग कहाँ तक पहुँचा है ?

**नेहा** : सर ! सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा है | आंकड़ों से संबंधित कार्य पूरा हो चुका है | ग्लोबल वार्मिंग का जीव-जंतु और पौधों की प्रजातियों पर पड़ने वाले प्रभावों पर कुछ ठोस निर्णयों पर हम पहुंचेंगे |

**नरेश** : आँकड़ों के विश्लेषण से हम कह सकेंगे कि किस प्रकार पर्यावरण-तन्त्र बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है | आने वाली सदी में सारे-का-सारा परितन्त्र बदल जाएगा, यदि वर्तमान परिस्थितियाँ अगले 50 वर्षों तक यों ही बनी रही |

**नेहा** : सर....प्रयोगशाला में हम वास्तविक पारिस्थितिकी तन्त्र को ध्यान में रखकर काम करते हैं | हमारे लीडर, नीति निर्धारक क्या सोचते और करते हैं...वह इससे भिन्न है | भविष्य में आने वाली पीढ़ियों पर किस प्रकार इसका प्रभाव पड़ सकता है, इस पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है |

**प्रो० कृष्णा** : नेहा तुम ठीक कह रही हो | यह हमारी समस्या है | हमने इसे पैदा किया है | इसलिए समाधान भी हमें ही तलाशने होंगे | यदि हम असफल होते हैं तो प्रकृति अपना समाधान तलाश लेगी |

**नरेश** : नीतियाँ वो बनात हैं जिन्हें व्यवहारिक ज्ञान नहीं होता है | क्या अन्य शोध रिपोर्टों की तरह, हमारा शोध भी अलमारियों में सिमट कर रह जाएगा ?

**नेहा** : नरेश तुम कुछ रिपोर्ट के बारे में चर्चा करना चाह रहे थे |

**प्रो० कृष्णा** : लगता है, नरेश के ध्यान में, अगला खुला सत्र रहा होगा | क्या इसकी सूचना सभी को दे दी गयी थी |

**नेहा** : सर, आपको जानकार खुशी होगी कि नरेश ने कुछ कलाकारों को और मैजिशियन को भी आमन्त्रित किया है |

**प्रो० कृष्णा** : अति सुन्दर.....

**नरेश** : सर - प्रातः 11.00 बजे तक सारी तैयारियाँ पूरी हो जाएँगी|

**प्रो० कृष्णा** : मुझे एक बैठक के लिए जाना है | यह हमारी नई शोध परियोजना से सम्बंधित है | O.K. Bye.... शुभ दिन...

**नेहा-नरेश** : Bye.... Bye....सर....

**######### ध्वनि प्रभाव #######**

***दृश्य - 3*** : (प्रातःकाल का समय / पक्षियों की चहचहाट...आम लोगों का शोर.....माइक ध्वनि प्रभाव)

**नेहा** : नमस्कार ! आपका स्वागत है | आप महेश और ये हैं छोटे कलाकार...I mean.....जमूरा (हँसते हुए)

**महेश** : नमस्ते मैडम ! आपने सही पहचाना है | स्कूलर तो कभी गलत हो ही नहीं सकते (हँसते हुए), हम समय पर हैं |

**नेहा** : (हँसते हुए) महेश....तुम्हारा जादू तो सब जगह काम करता है | घड़ियों की सुईयाँ इसी से नियन्त्रित होती है | राजू - तुम कैसे हो ? नरेश बता रहा था कि तुम वैज्ञानिक बनना चाहते थे | कोई चिंता नहीं | एक अच्छा कलाकार भी किसी वैज्ञानिक से कम नहीं होता है | तुम्हारी कला और जादू - लोगों को कुछ नया करने के लिए प्रेरित करती है |

**राजू** : मैडम.....मैं अपने कार्य से सन्तुष्ट हूँ | एक दिन मैं अवश्य बड़ा जादूगर बनूँगा | इसमें कोई शक नहीं है |

**नरेश** : वाह ! क्या आत्मविश्वास है ? अवश्य तुम एक बड़े जादूगर बनोगे | अगले कुछ क्षणों में कार्यक्रम शुरू होने वाला है |

**आप चलकर अपनी सीट ग्रहण कर लें |**

**##ध्वनि प्रभाव....माइक ###**

**नरेश** : हैल्लो-हैल्लो ! मेरी आवाज़ आ रही है | आज के विषय के बारे में आपको पता ही है | इस खुले सत्र में ग्लोबल वार्मिंग, मौसम में बदलाव, जीव-जन्तु और वनस्पतियों के स्थान में बदलाव जैसे मुद्दों पर चर्चा प्रस्तावित है |

**##(ध्वनि प्रभाव अतिथियों का आगमन ) ##**

**महेश** : मैं नेहा से निवेदन करना चाहूँगा कि वो अतिथियों का पुष्प-गुच्छ से स्वागत करें |

**## तालियों का ध्वनि प्रभाव ##**

**नेहा** : नमस्कार ! सुस्वागतम् ! मैं प्रो० कृष्णा को आमंत्रित करूँ, उससे पहले बताना चाहूँगी कि वो एक ख्याति प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक हैं | कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से आप नवाजें जा चुके हैं | और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के सदस्य भी आप हैं | प्रो० कृष्णा को मैं मुख्य वक्तव्य के लिये आमंत्रित करती हूँ|

**## ध्वनी प्रभाव ##**

**प्रो० कृष्णा** : नेहा सुन्दर परिचय के लिए आपका धन्यवाद | यहाँ पर मैं मिस्टर नरेश को भी, इस आयोजन के लिए धन्यवाद करना चाहूँगा | हमारे प्राचार्य महोदय और डीन - छात्र कल्याण यहाँ उपस्थित हैं | इसके लिए मेरा उन्हें आभार....

आज के विषय का सुझाव भी मेरे शोध-छात्रों द्वारा सुझाया गया था | “वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं का विस्थापन” विषय अटपटा जरुर लगता है, परन्तु आज के सन्दर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है | यदि वर्तमान परिस्थितियाँ जारी रही, तो एक दिन, यह समस्या बहुत गंभीर हो सकती है | इस सदी के अंत तक, यह अनियंत्रित समस्या के रूप में उभर कर सामने आयेगी | वैज्ञानिकों ने भौतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया है और निर्णय पर पहुंचे हैं कि, ध्रुवों की बर्फ का पिघलना, समुद्रों के जल-स्तर में बढ़ोतरी और आँधी -तूफ़ान जैसी समस्यायें और विकराल होती जाएँगी |

मौसम से सम्बंधित तैयार शोध-मॉडलों के अध्ययन से वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि रेगिस्तान और सूखे की समस्याएँ बढेंगी | बदली परिस्थितियों के कारण जीव-जन्तु और पेड़-पौधे, जीवित रहने के लिए नए स्थानों की तलाश करेंगे | इसका सबसे सुन्दर उदाहरण है, कनाडा में पाये जाने वाले Lynx (लायिनक्स) का | 2.5०C से 4.5०C तक तापमान बढ़ने के कारण जिस खरगोश की प्रजातियों पर यह निर्भर करती है, वह अपने मूल स्थानों से उत्तर की और आर्टिक की तरफ चली जायेगी | परिणाम लायिनक्स का उत्तर की ओर विस्थापन |

एक दूसरे शोध-मॉडल से पता चला है कि वर्षा की कमी के कारण पेड़ों की हरियाली कम होती जायेगी और घास के मैदानों का क्षेत्रफल बढ़ता चला जाएगा | इससे भी कई गंभीर समस्यायें पैदा हो सकती हैं |

पक्षी-ऊंचाई वाले क्षेत्रों की और चले जायेंगे, परन्तु तितलियों की प्रजातियाँ और चीड़ के वृक्ष, निचले स्थानों की और जाते दीखते हैं |

**नेहा** : प्रो० कृष्णा, मेरे जहन में एक प्रश्न उठ रहा है | सभी पेड़-पौधे और जीव-जन्तु, अनुकूल परिस्थितिकी तन्त्र में फलते-फूलते हैं | किसी क्षेत्र के मौसम में बदलाव वहां पर पाये जाने वाली प्रजातियों के स्वरूप को ही बदल देता है | यदि ऐसी ही परिस्थितियाँ रही तो, भविष्य क्या रहेगा ?

**प्रो० कृष्णा**: नेहा, जैसे-जैसे धरती गर्म होगी, ठन्डे प्रदेशों में रहने वाली प्रजातियाँ, पहाड़ों की और तथा आर्टिक क्षेत्रों की तरफ विस्थापित होने लगेंगे | यदि धरती इसी प्रकार गर्म होती रही तो, अगले 100 वर्षों में एक चौथाई, पेड़-पौधे और जीव-जन्तुओं की प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएँगी | एक शोध में पाया गया है कि पिछले दो दशकों में यूरोप में पाये जाने वाले पक्षियों और तितलियों की प्रजातियाँ 37 से 114 किलोमीटर तक उत्तर में चली गयी हैं |

**रामू** : सर...सर ! मैं इस विषय में ज्यादा नहीं जानता हूँ | इन सबका हमारे जीवन से क्या सम्बन्ध है ?

**नरेश** : प्रो० कृष्णा मैं बताना चाहूँगा, ये हैं मास्टर जमूरा (हंसता है) महेश के साथ, ये सहायक की भूमिका निभाते हैं | इनका नाम रामू है |

**प्रो० कृष्णा :** मेरे दोस्त....मैं तुम्हारे सवाल की प्रशंसा करता हूँ | इसको हम मानव प्रवृति के साथ जोड़कर देख सकते हैं | भौतिक अड़चन, उच्च पर्वत, घने आबादी वाले क्षेत्रों को ध्यान में रखना भी आवश्यक है | हिमालय इसका अच्छा उदाहरण है | जैसे गर्मी के मौसम में हम पर्वतों की ओर ठन्डे क्षेत्रों की तरफ जाना पसन्द करते हैं, कुछ इसी प्रकार की बात, जीव-जन्तु और पेड़-पौधों पर भी लागू होती है |

**महेश** : सर...मेरा नाम महेश है | हम सभी जानते हैं कि ये एक गंभीर समस्या है और हमारे सिर पर लटक रही है | हमारे नेतागण और नीति-निर्धारक, इस बारे में गम्भीर नहीं हैं | आखिर, इससे कैसे निपटा जा सकता है |

**प्रो० कृष्णा** : महेश....जब आप अपना जादू का खेल दिखाते हो तो आम लोगों के स्तर तक जाकर अपनी बात कहते हो | जिस प्रकार पेड़-पौधे और जीव-जंतु बदली परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढाल लेते हैं, उसी प्रकार मानव को भी परिस्थिति तन्त्र के अनुसार अपने को बदलना होगा | हम जीव-जंतु और पेड़-पौधों की परिस्थिति की सुरक्षा में अहम भूमिका निभा सकते हैं |

कोरल-रीफ इसका अच्छा उदाहरण है | मृत नन्हें जीवों के कंकाल से बनते हैं - कोरल रीफ | समुद्रों के पानी के गर्म होने और ब्लीचिंग के कारण धीरे-धीरे मरते जा रहे हैं | यदि ऐसी ही परिस्थिति जारी रही तो, अगले 50 वर्षों में उष्ण-कटिबंधीय क्षेत्रों से कोरल विलुप्त हो जायेंगे | इनकी सुरक्षा के लिए हमें आगे आना होगा |

**नरेश** : प्रो० कृष्णा, मैंने एक ऐसे ही शोध-मॉडल का अध्ययन किया है | इसमें बताया गया है कि हज़ारों प्राणी और वनस्पति की प्रजातियाँ विस्थापित हो रही हैं |

**प्रो० कृष्णा**: मिस्टर नरेश....4000 प्रजातियों के अध्ययन में पाया गया है कि आधी प्रजातियाँ विस्थापित हो रही हैं | जमीन पर इनके विस्थापन की गति 10 किलोमीटर तक देखी गयी है और समुद्रों में यह गति चार गुणा तक पाई गयी है |

**प्राचार्य** : प्रो० कृष्णा, आपका शोध कार्य, जीव-जन्तुओं पर ग्लोबल वार्मिंग के पड़ने वाले प्रभावों पर आधारित है | क्या इसका प्रभाव उनकी जैविक साईकल यानी Biological cycle पर भी पड़ता है |

**प्रो० कृष्णा:** धन्यवाद प्राचार्य महोदय | कालेज में, पहले भी कई मंचों पर मैं अपना शोध कार्य प्रस्तुत कर चुका हूँ | मेरे शोध कार्यों से पता चला है कि जैविक-घड़ी में बदलाव हो रहे हैं | मेंडक में देखा गया है कि उनका जनन-चक्र एक दशक में आठ दिन तक खिसक गया है | वहीँ पक्षियों और तितलियों में यह बदलाव चार दिनों का पाया गया है | पेड़-पौधों में भी फूल और फलों का समय-चक्र बदला है | जीवों के विस्थापन के कारण, नई शंकर नस्लें सामने आने लगी हैं|

**महेश** : प्रो० कृष्णा, इस विस्थापन के क्या गम्भीर परिणाम सामने आ सकते हैं ?

**प्रो० कृष्णा**: मौसम में बदलाव के कारण, सूखा पड़ रहा है, बाढ़ आ रही हैं, तापमान में बदलाव हो रहा है | परिणाम - जीवों का विस्थापन.....

**प्रो० कृष्णा**: हम अपनी इस चर्चा को विराम दें, उससे पहले मैं चाहूँगा कि मिस्टर नरेश, समस्या से निपटने के कुछ सम्बंधित मुद्दों पर रोशनी डालें |

**नरेश** : धन्यवाद प्रो० कृष्णा | अलग-अलग शोध कार्यों ने कई सुझाव सुझाये हैं | सबसे पहले हमें समस्या की जड़ में जाना होगा | विस्थापन की समस्या कितनी गम्भीर है यह भी जानना जरुरी है | जो शरणार्थी, विस्थापित होकर आते हैं, उन्हें स्थापित करना और शरण देना भी आवश्यक है | हमें अपने पर्यावरण और जंगलों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए अलग से आर्थिक मदद का प्रावधान करना होगा, जो विस्थापन की श्रेणी में हैं |

**प्रो० कृष्णा:** धन्यवाद नरेश | मैं ह्रदय से आप सभी का शुक्रिया करना चाहूँगा कि आपने समय निकाला और बड़ी ही तत्परता से इस चर्चा में भाग लिया |

**नेहा** : प्रो० कृष्णा जी .....आपका बहुत-बहुत धन्यवाद | मैं प्रिंसिपल सर और डीन महोदय को भी शुक्रिया कहना चाहूँगी, जिनके कारण हम, इस खुले मंच का आयोजन कर सके | धन्यवाद भाई महेश और उनके छोटे कलाकार मास्टर राजू का.....वो अपने नुक्कड़-नाटकों के माध्यम से इस समस्या के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा सकते हैं |

अंत में आप सभी का जलपान के लिये स्वागत है, जिसकी व्यवस्था बाहर गैलरी में की गई है | आप अपने विचार वहां भी साँझा कर सकते हैं | धन्यवाद...नकास्कार |

**### धारावाहिक संगीत का समापन भाग ###**

**********